पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

पूज्यपाद गुरुदेव का जन्म लगते असौज तीज सन् 1942 में ग्राम खुर्रमपुर-सलेमाबाद, जनपद गाजियाबाद (पहले मेरठ) उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनके पिताजी का नाम श्री नानक चन्द और माता जी का नाम श्रीमती सोना देवी था। लगभग दो मास की अवस्था में श्वासन में लेटने से ही कुछ समय के उपरान्त शिशु की गर्दन दोनों ओर हिलने लगी और होठ फड़फड़ाने लगे। इस क्रिया की पुनरावृत्ति होने पर अज्ञानतावश उपचार प्रारम्भ हो गया। परन्तु उस विशेष अवस्था में जाने की घटनाएँ बढ़ती रहीं और आयु बढ़ने के साथ-साथ मन्त्र-पाठ और प्रवचन स्पष्ट सुनाई देने लगा। छः वर्ष की आयु में इन्हें भयानक चेचक निकली जो इनके मुख-मण्डल पर अपनी स्मृति छोड़ गई।

सात वर्ष की अल्पायु में ही इनके पिताश्री ने अपने गाँव में ही पशुओं व कृषि के कार्य के लिए नौकर रख दिया। धीरे-धीरे इनके प्रवचनों की क्रिया को मनोरंजन व कौतुक का साधन बनाया जाने लगा। एक दिवस प्रवचन की प्रक्रिया के पश्चात् अत्याधिक पिटाई के कारण लगभग 15 वर्ष की अवस्था में भीषण परिस्थितियों में मध्य रात्रि में गृह को त्यागकर विचरण करते हुए अपनी कर्मभूमि बरनावा जा पहुँचे वहाँ पर आप योग मुद्रा में समाधिस्थ होकर प्रवचन करने लगे, जिसकी सुगन्धी आस-पास में तीव्रता से फैल गई। आपने अपने प्रवचनों के माध्यम से वेद ब्रह्म पारायण यज्ञों का आयोजन करना शुरु कर दिया। जन-समूह के अथाह प्रेम व सहयोग से बरनावा लाक्षागृह पर पाँच यज्ञशालाएँ, महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, आश्रम व गऊशाला की स्थापना की, जिसका प्रबन्ध उनके द्वारा स्थापित श्री गाँधी धाम समिति की देखरेख में होता है।

पूज्यपाद गुरुदेव 28 दिसम्बर 1961 में पहली बार दिल्ली प्रवचन के लिए आए। अथाह ज्ञान के भण्डार, आध्यात्मिक जगत की महान् व अद्भुत विभूति के प्रवचन सुनने के पश्चात् प्रवचनों को टेप करने का निर्णय लिया गया और कुछ समय के उपरान्त प्रवचनों को टेप करके प्रकाशित करने के लिए पूज्यपाद गुरुदव की संरक्षकता में वैदिक अनुसन्धान समिति का दिल्ली में गठन हो गया। जन्म जन्मान्तरों के शृङ्गी ऋषि की पुण्य आत्मा ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज इस अज्ञानता के युग में वैदिक संस्कृति का पुनः से उत्थान करने के लिए जीवनपर्यन्त लगे रहे। ऋषि-मुनियों ने अनुसन्धान के द्वारा भौतिक व आध्यात्मिक विज्ञान को अपने जीवन में कितना साकार किया है उसकी अथाह चरमसीमा इनके प्रवचनों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। इस अथाह ज्ञान को मानवता के लिए आचरण व व्यवहार में लाने का सरल व श्रेष्ठ मार्ग प्रदर्शित किया है और साहित्य की गुत्थियाँ स्पष्ट की हैं। जिससे मानव अपना व जनसाधारण का कल्याण करते हुए इस भव सागर से पार हो सकता है।

यह दिव्य आत्मा 15 अक्टूबर 1992 को पचास वर्ष की अवस्था में ब्रह्ममूहुर्त के समय अपने लोकों को गमन कर गई। **–वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

प्रभु! आप कैसी मेरी पवित्र माँ हैं। हे माँ! तू कितनी भोली है, तू कितनी पवित्र है। हम तेरे आङ्गन में आते हैं, तू विष्णु रूप से भी कहलाई गई है। शक्ति रूपों से भी तेरा प्रतिपादन किया गया है। माँ! तू कितनी भोली है। जब हम तेरे आङ्गन में आते हैं, तो ज्ञान और विवेक से युक्त होकर के आते हैं, माँ! वास्तव में तू हमारे हृदय का भरण कर देती है। तू, कैसी महती है। तू कैसी ममतामयी है, बालक क्षुधा से पीड़ित हो रहा है, माँ तू उसे लोरियों का पान कराती हुई उसकी क्षुधा और पिपासा को शान्त कर देती है। इसी प्रकार हे माँ! मैं तेरे द्वार पर विवेकी बन करके आना चाहता हूँ। मुझे शक्ति दे, बल दे, ओज दे, तेज दे जिससे माता मैं तेरी उस महान् ज्योति का दर्शन कर सकूँ। तेरी जो महान् ज्योति है, तेरी जो करूणामयी ज्योति है जिस करूणा से हे विष्णु! आप संसार का लालन पालन करते हैं। मैं भी तेरे द्वार पर आना चाहता हूँ, उस पिपासा में मैं रमण करना चाहता हूँ जिस पिपासा के लिए सदैव मानव अपने में ही परणित हो जाता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 586 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 661
वर्ष : 50 44 समग्र वर्ष : 56

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. जीवन दर्शन	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-18
4. आर्यावर्त्त (गताङ्ग से)	पूज्यपाद-गुरुदेव एवं महर्षि महानन्द जी महाराज	19-29
5. ब्राह्मण की व्याख्या	पूज्यपाद-गुरुदेव	30-34
6. रात्रि काल की तरङ्गें	पूज्यपाद-गुरुदेव	34-35
7. ऋषियों के उद्‌गार		36
8. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		37-42

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) PAN No. – AAAAV7866J
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. 0149000100229389, IFS Code - PUNB 0014900

शृङ्गीऋषि वेबसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

जीवन दर्शन

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस महामना मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि जितना भी ये जड़-जगत अथवा चेतन-जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वो मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। क्योंकि प्रत्येक वेद मन्त्रः उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है, इसी प्रकार प्रत्येक वेद मन्त्रः मानो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान का वर्णन करता रहता है। इसलिये हमारा वेद मन्त्र ये कहता है क्या हम उस परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा को प्रायः हम अनुसरण में, अपने क्रियाकलापों में लाते चले जायें, क्योंकि प्रत्येक मानव जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा को अपनाने वाला बनता है तो ये समाज और ये मानव तो प्रायः पवित्र हो जाता है।

आज का हमारा वेद मन्त्रः हमें कुछ प्रेरणा दे रहा है। हमारा वेद मन्त्रः, एक-एक शब्द, उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान से पिरोया हुआ है अथवा उसमें वो ओत-प्रोत हो रहा है। हमारे यहाँ ओत-प्रोत की चर्चायें, प्रायः परम्परागतों से ही मानवीय जीवन में निहित रही हैं। क्योंकि **मानव उसी को कहते हैं जो एक-दूसरे में समाहित हो जाये और जिसमें वो समाहित हो जाता है मानो उसी में वो रत्त हो करके उसी का गुणगान गाता है।** तो इसलिये हम परमपिता परमात्मा की महिमा

का गुणगान गाते हुये ये जो ब्रह्माण्ड मानो अपने में एक अनूठा प्रतीत हो रहा है इस ब्रह्माण्ड को हम अपने से दूरी करते हुये, जो ब्रह्माण्ड में जो वस्तु मानो समाहित हो रही है, और जिस वस्तु का प्रत्येक मानव जिस चेतना का अनुसरण करता रहा है उस महान् क्रिया को हमें जानना है। मेरे प्यारे! देखो यहाँ एक मण्डल दूसरे से पिरोया हुआ है। एक मानव, मानव से पिरोया हुआ है, मानव, मानव में समाहित हो रहा है। तो मेरे प्यारे! ये तो परमात्मा का एक अनूठा जगत है, अनूठी एक प्रतिभा है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से अन्वेषण करता रहा है। मैंने इससे पूर्व काल में तुम्हें बेटा! अपना विचार देते हुये कहा था क्या सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना प्रकार के, नाना प्रकार के विज्ञान में मानव लगा हुआ है, आध्यात्मिकवाद में भी लगा हुआ है और ये ही उसकी इच्छा होती है कि मैं अपने में मृत्युञ्जय बन जाऊँ। क्योंकि मृत्युञ्जय बनने की प्रत्येक मानव परम्परागतों से बेटा! उड़ाने उड़ता रहा है। मानो देखो, याग इत्यादियों में वो परणित हो जाता है।

महाराजा अश्वपति के यहाँ अग्निष्टोम याग

जैसे हमारे यहाँ महाराजा अश्वपति के यहाँ बेटा! जब भी कोई याग होता, चाहे वो याग वृष्टि याग के रूप में हो, चाहे वो वाजपेयी याग के रूप में हो, चाहे अग्निष्टोम याग के रूप में हो, परन्तु चाहे वो मानो अश्वमेध याग हो, किसी भी प्रकार का याग हो, महाराजा अश्वपति के यहाँ जब भी याग हुआ तो बेटा! उसमें एक-से-एक ऊर्ध्वा में प्रश्न करना प्रारम्भ हुआ। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है, महाराजा अश्वपति के यहाँ बेटा! एक याग हुआ, जिसको हमारे यहाँ अग्निष्टोम याग कहा जाता है।

उद्गाता का रहस्य

मेरे प्यारे! देखो महाराजा अर्धभाग ने अपनी देवी से कहा कि हे देवी! महाराजा अश्वपति के यहाँ एक याग हो रहा है और मैं उस याग में उद्गाता

बनाना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो देवी ने कहा भगवन् बहुत प्रिय, आप यज्ञ में यागाम् भविते क्योंकि ये तो जितना भी ब्रह्माण्ड है ये याग रूप है और राजा अपने राष्ट्रीय याग करा रहा है। वो मानो प्रजा और अपने में, दोनों में जो अन्तर्द्वन्द्व है उसकी अन्तर्द्वन्दता को समाप्त करने का नाम मानो याग कहा जाता है। महाराजा अश्वपति का राष्ट्र एक ऐसा राष्ट्र है जो मानो अपने में और प्रजा में किसी प्रकार का जो अन्तर्द्वन्द्व है उसे वो प्रकाश में लाना चाहते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो महाराजा अश्वपति के यहाँ याग की सब क्रियायें मानो देखो, सम्पन्न हो गयी थीं, वह मानो देखो, जब क्रियायें सम्पन्न हुई तो महाराजा देखो, महर्षि अर्धभाग अवभ्रवेः, मुनिवरो! देखो, वह जा करके उद्गाता के आसन पर विद्यमान हो गये। जब उद्गाता के आसन पर विद्यमान हो गये, तो मुनिवरो! देखो महाराजा अश्वपति ने कहा–हे ऋषिवर! तुम याग में मानो अपने उद्गाता के आसन पर विद्यमान हो गये हो, मैं ये नहीं जान पाया हूँ कि तुम उद्गाता के योग्य हो या नहीं। तो मेरे प्यारे! देखो जब राजा ने ये कहा तो उन्होंने कहा प्रभु ये सुयोग्य और अयोग्य की वार्त्ता नहीं है, अयोग्य की वार्त्ता भी नहीं है, ये तो मैं उद्गाता के सुयोग्य हूँ और मैं वेद का पठन-पाठन जानता हूँ इसलिये मैंने इस आसन को ग्रहण कर लिया है। तो मेरे पुत्रो! देखो महाराजा अश्वपति ने कहा–हे ऋषिवर! आप जो इस याग में सह-सम्मिलित हो गये हो, मानो उद्गाता बनना चाहते हो तो तुम उद्गाता क्यों बने हो, उद्गाता का रहस्य क्या है? उन्होंने कहा उद्गाता कहते हैं जो वेदों का उद्घोष करता है, जो मानो देखो, वेदों का उद्घोष करके प्रत्येक यजमान की वाणी को जो 'स्वाहा' कह रहा है जो याग का आत्मा है मानो देखो, उस 'स्वाहा' को मैं द्यौलोक में परणित कराना चाहता हूँ। मुनिवरो! देखो, क्योंकि वेद का जो मन्त्र है, उसका जो देवता है, उसी देवता के माध्यम से मानो देखो, द्यौलोक में परणित करना चाहता हूँ। मुनिवरो! देखो, राजा ने कहा यथार्थ। परन्तु देखो पुनः उन्होंने ये प्रश्न किया कि महाराज ये जो मानो देखो, यजमान याग करने जा रहा है, ये याग तो मृत्युञ्जय बनाने के लिए मानो देखो, मृत्युञ्जय बनने के लिए

याग होता है, ये यजमान मृत्यु को कैसे पार कर सकता है, इसमें आप क्या उत्तर दे सकेंगे? तो मेरे प्यारे! महात्मा अर्धभाग ने कहा कि महाराज यजमान जो उद्गाता बना हुआ है, अप्रतम उद्गोह ब्रह्मणे व्रताः मैं भी उद्गाता बना, वो भी उद्गाता के रूप में है। वो वाणी से, साकल्य से उद्गीत गा रहा है, मैं देवता के माध्यम से उद्गीत गा रहा हूँ। परन्तु देखो ये जो ब्रह्मे व्रताम् देवाः ये जो यजमान मृत्युञ्जय बनना चाहता है, ये व्यष्टि से समष्टि में प्रवेश होना चाहता है।

व्यष्टि से समष्टि में प्रवेश

व्यष्टि किसे कहते हैं और समष्टि किसे कहते हैं? बेटा! व्यष्टि कहते हैं मानो एक संकीर्ण अपनी आभा को जितना भी संकीर्ण उसका एक नृत्य हो रहा है उस मानो स्थली पर हो रहा है, उसे हमारे यहाँ व्यष्टि कहते हैं। और समष्टि उसे कहते हैं जो व्यापक रूप से किसी वस्तु को विचार लिया जाता है जैसे एक मानव नेत्रों से संसार के, संसार के नाना प्रकार के पदार्थों को वो दृष्टिपात कर रहा है परन्तु उन पदार्थों की जो स्थिति है, वो मानव के हृदय में, हृदय में स्थिर हो जाती है। नेत्रों से दृष्टिपात कर रहा है, हृदय में वो परणित हो रही है। मेरे प्यारे! देखो शब्दों से शब्दों को ग्रहण कर रहा है परन्तु देखो हृदय में उसकी स्थिति हो रही है। इसी प्रकार त्वचा से मानो प्रीति कर रहा है, वायु का भान कर रहा है वो भी हृदय में प्रवेश कर रही है। मानो इसी प्रकार देखो ब्रव्हे वाणी से उद्गीत गा रहा है, उन शब्दों की प्रतिभा का जो नृत्य हो रहा है वो मानव के हृदय में हो रहा है। तो मानो देखो, ये जो घ्राण है ये नाना प्रकार के मन्द-सुगन्ध को अपने में ग्रहण कर रही है परन्तु देखो हृदय में उसकी स्थिति हो रही है। ये हृदय ही बेटा! इस ब्रह्माण्ड का एक केन्द्र माना गया है, इस ब्रह्माण्ड के ऊपर चिन्तन कर रहा है, वह चिन्तन करता-करता उसकी स्थिति मानो हृदय में प्रवेश कर जाती है। हृदय में ही मुनिवरो! देखो, सर्वत्रता में परणित हो जाता है। जैसे एक मानव देखो लोक-लोकान्तरों की गणना कर रहा है, लोकों में प्रवेश करना

चाहता है, नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों की उड़ान में लगा हुआ है, परन्तु उसकी जो स्थिति है वो भी हृदय में समाहित हो जाती है। तो मेरे पुत्रो! विचार-विनिमय क्या, एक मेरा मानो देखो, ये विचार रहा है, क्या ये संसार कितने रूपों में परणित हो रहा है। मानो देखो, नाना प्रकार की सृष्टि की रचनायें हो रही हैं, उन रचनाकारों ने चार प्रकार की मुनिवरो! देखो, सृष्टि का निर्माण हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो जो स्थावर है, अण्डज है, जङ्गम है और उद्भिज सृष्टि कहलाती है। ये चारों प्रकार की सृष्टियों का जो निर्माण हो रहा है, उसके निर्माण का जो क्रियाकलाप है, उसकी भी स्थिति मानव के हृदय में प्रवेश कर जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो हृदय से नाना प्रकार के शब्दों की रचनायें होती हैं और वो आकारित बन करके बाह्य जगत में प्रवेश कर जाती हैं। बाह्य जगत का भी ब्रह्माण्ड बन रहा है, आन्तरिक जगत भी निर्माणित हो रहा है। तो मेरे पुत्रो! ये कैसा विचित्र निर्माण है, कृत्य है, जो हृदय में ही हृदय आलिङ्गन हो रहा है। परमपिता परमात्मा के हृदय से जब मानव के हृदय का समन्वय होता है, समन्वय होता हुआ मेरे पुत्रो! देखो वह सम्भी वृताम् ब्रव्हे वर्णस्ताहां, वेद का वाक्य कहता है जहाँ समन्वय हुआ परमपिता परमात्मा से उस साधक का बेटा! मिलान हो जाता है। वह जो मानव हृदयरूपी यज्ञशाला में, जो हृदय में मानो देखो, व्यापिक रूप से दृष्टिपात करता है, समष्टि में प्रवेश कर जाता है। तो समष्टि कहते हैं इस ब्रह्माण्ड की ऊर्ध्वा कल्पना का नाम और हृदय में उसका चिन्तन, उसका नाम बेटा! समष्टि कहा जाता है। और व्यष्टि कहते हैं संकीर्णता को, जैसे एक मानव एक चिन्तन कर रहा है और चिन्तन करता हुआ एक सुन्दरी का दर्शन कर रहा है, परन्तु दर्शन करता हुआ अपनी भोले ब्रहे मानो देखो, उसमें एक विचार आता है व्यापिक और एक संकीर्ण विचार आता है, परन्तु संकीर्णता का नाम ही मानो व्यष्टि कहलाता है और जो उसमें ये आता है कि मेरा प्रभु कितना कलाकार है, कितना मानो निर्माणवेत्ता है, उस मेरे प्यारे! प्रभु! ने कैसा सुन्दर ये मानो देखो, रचनावृत्तियों में निर्माणित की है और माता के गर्भस्थल में की है। लेपन करने वाला वो विश्वकर्मा है, मानो

देखो, विश्वकर्मा कितना महान् है, कितना मानो देखो, उज्ज्वल है और कितनी महानता की रचना कर रहा है तो बेटा! देखो वह समष्टि कहलाती है। तो इसलिये मानव अपने जीवन को ऊँचा बनाना चाहता है तो वो समष्टि में प्रवेश हो जाये। और व्यष्टि को त्यागने का, व्यष्टि को मानव उसे समाप्त करने का प्रयास करता रहे। तो विचार-विनिमय क्या, मेरे पुत्रो! देखो हमारे यहाँ वैदिक ऋषि ने कहा है–हे राजन्! हम समष्टि और व्यष्टि में प्रवेश करना चाहते हैं और उसी को हमारे यहाँ उद्गाता कहा जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो राजा ने ये वाक्य स्वीकार कर लिया, राजा तो मौन हो गये।

वाणी को पवित्र बनाने की प्रेरणा

देखो, राजलक्ष्मी उपस्थित हो करके बोली क्या हे प्रभु! ये जो आप उद्गाता बने हैं, उद्गाता बनने का आपका अभिप्रायः क्या है? उन्होंने कहा–हे देवी! मैं जो उद्गाता बन गया हूँ, मैं उद्गीत गाने के लिए जिससे मेरी वाणी पवित्र बन करके और मैं यजमान की वाणी को पवित्र बना सकूँ। देखो, होताओं की वाणी को पवित्र बना सकूँ। मानो देखो, मेरा मन्तव्य यही है क्या उद्गाता बनने का कि मेरी वाणी द्यौलोक में प्रवेश हो जाये और जितनी मानव की वाणी वैदिक मन्त्रों से सजातीय होती है, उतना ही मानो देखो, द्यौलोक और ये मानो देखो, 'भूर्भुवः स्वः', ये लोक पवित्र बन जाते हैं। गृह पवित्र बन जाता है जैसे मानो देखो, जिस राष्ट्र में, जिस गृह में मैं विद्यमान हूँ, उसमें मैं उद्गाता बन करके उद्गीत गा रहा हूँ, वाणी को सजातीय बना रहा हूँ वेद मन्त्रों के द्वारा। मानो प्रकाश से मैं अपनी वाणी को कटिबद्ध कर रहा हूँ। तो वही वाणी पवित्र बन करके ब्रह्मवाचो प्राहा वह वायुमण्डल को, गृह को पवित्र बनाती हुई मानो देखो, मानव के हृदय को स्वच्छ बनाती रहती है। विचार-विनिमय क्या बेटा! जिस गृह में मानो दर्शनों का अभ्यास होता है, दर्शनों का और वेद मन्त्रों का उद्गीत गाया जाता है वह गृह पवित्र हो जाता है और जिस मानो देखो, गृह में कलह रहता है वहाँ

नार्किकता मानो समाहित हो जाती है। तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरो! देखो, इसलिये मानव को अपनी वाणी को पवित्र बनाना है। मेरे प्यारे! देखो देवी इस वाक्य को श्रवण करके मानो देखो, मौन हो गई और याग प्रारम्भ होने लगा।

मेरे प्यारे! देखो याग जैसे ही प्रारम्भ हुआ, उस समय ब्रह्मे वाचप प्रवाहा लोकाम् वेद का आचार्य बेटा! जब उद्गीत गाने लगा उद्गाता बन करके उद्गीत जब गाने लगा, तो मुनिवरो! देखो, उद्गीत जब हृदय से आलङ्गन करता हुआ जब बाह्य जगत में प्रवेश करता है तो बेटा! वह अशुद्ध परमाणुओं की प्रतिभा को नष्ट करता चला जाता है। तो आओ मेरे प्यारे! मैं गम्भीरता में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ।

यज्ञशाला का स्वरूप

आज का हमारा वेद मन्त्र कहता है क्या परमपिता परमात्मा ने जो सृष्टि का, ये सृष्टि का सृजन किया है, मानो निर्माण किया है, ये ब्रह्माण्ड भी एक प्रकार की बेटा! यज्ञशाला के रूप में परणित रहती है। मानो ये यज्ञशाला है, ये यज्ञशाला मानो देखो, मेरे प्यारे! प्रभु ने सृष्टि के प्रारम्भ में इस यज्ञशाला को उत्पन्न किया है। इसमें मानो एक-दूसरा प्राणी क्या, जड़वत् क्या बेटा! एक-दूसरे में ओत-प्रोत होता हुआ मुझे दृष्टिपात आता है। एक माला के सदृश ये ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आने लगता है जैसे बेटा! माला है और माला में सूत्र है, और मनके हैं, दोनों के समन्वय का नाम ही मेरे पुत्रो! देखो माला कहलाती है। इसी प्रकार ये जो संसाररुपी यज्ञशाला है मानो देखो, इसमें ब्रह्मा उद्गीत अग्रतम् ब्रह्मा वाचो मानो देखो, कोई यजमान बना हुआ है, कोई उद्गीत गा रहा है उद्गाता बना हुआ है, कोई अध्वर्यु बना हुआ है, कोई मानो देखो, यजमान बन करके ब्रह्मा से प्रार्थना कर रहा है कि हे भगवन्! आप मेरे याग को सम्पन्न कीजिये। तो मेरे प्यारे! देखो ये उद्गीत गाता हुआ जो वृत्त है आज उसी को, आज हमें ये दृष्टिपात आता है कि ये जो ब्रह्माण्ड है ये एक प्रकार की यज्ञशाला है। मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मा,

परमपिता परमात्मा देखो ब्रह्मा बना हुआ है, आत्मा यजमान है, पञ्चमहाभूत मुनिवरो! देखो, ये उब्रहे होता बन करके इस यज्ञशाला में बेटा! आहुति दे रहे हैं। होता बन करके मानो इस ब्रह्माण्ड को क्रियाशील बना रहे हैं। तो विचार-विनिमय क्या मेरे पुत्रो! जब हम ये विचारते रहते हैं कि हमारा राष्ट्र, हमारी ये वाक् शक्ति क्या कहती है, क्या मुनिवरो! देखो, इसको हमें ऊर्ध्वा में लाना है, मानो देखो, ऊर्ध्वा और इस ब्रह्माण्ड को जान करके हम विज्ञान के वाङ्मय में प्रवेश हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो ये एक प्रकार की जैसे यज्ञशाला है, जानकारी के लिए यही विज्ञानशाला बन करके रहती है। मेरे पुत्रो! देखो जैसे माला है, मैंने माला का उद्गीत विचार देते हुये अपनी वृत्तियों में कहा है क्या जैसे माला है, माला में बेटा! एक धागा है, एक सूत्र है, इसी प्रकार इस ब्रह्माण्ड का, इस यज्ञशाला रूपी इस जगत का भी बेटा! कोई-न-कोई सूत्र बना हुआ है जिसमें ये पिरोई हुई है और जिसमें मानो एक-दूसरा परमाणु पिरोया हुआ है।

शब्द की गति

मेरे पुत्रो! देखो मुझे वो काल स्मरण आता रहता है बेटा! जब, भारद्वाज मुनि के विद्यालय में मेरे पुत्रो! देखो ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धि दोनों मानो देखो, अपने एक यन्त्र के द्वारा, यन्त्र के द्वारा बेटा! शब्द के ऊपर मानो वह अनुसन्धान करते रहते थे। वो शब्द के साथ में जो चित्रावली बेटा! देखो गति करती अन्तरिक्ष में प्रवेश कर जाती मानो उसको दृष्टिपात करते रहे हैं। तो मेरे प्यारे! देखो जब मैं विज्ञान के वाङ्मय में हम प्रवेश करते हैं, विज्ञान की धाराओं में प्रवेश, मानो ओत-प्रोत हो जाते हैं तो बेटा! ये ब्रह्माण्ड एक प्रकार का मानो खिलवाड़ दृष्टिपात आने लगता है। मानो देखो, एक माला ब्रव्हे वाचन्नमम् ब्रह्मा वायु लोकाः मेरे पुत्रो! देखो एक-दूसरे में ओत-प्रोत होने वाला जगत है। जैसे आज का हमारा वेद मन्त्र कुछ कह रहा था। आज का वेद मन्त्र ये कहता था सम्भवम् लोकाम् प्रथम ब्रह्मे वायु सम्भवाः वाचन्नमम् ब्राहा मेरे प्यारे! देखो ये वेद मन्त्र ये कहता है

क्या आज हम मुनिवरो! देखो, प्रत्येक शब्द के साथ में एक आकार दृष्टिपात करते हैं। मेरे प्यारे! देखो शब्द के साथ में एक शिशान्त है मानो देखो, उसके अन्तर्गत नाना प्रकार के परमाणु गति करते रहते हैं जैसा मैंने इससे पूर्व काल में तुम्हें निर्णय देते हुये कहा था। जैसे एक मधुमक्खी होती है परन्तु देखो उसके अन्तर्गत एक रानी मक्खी होती है और उसके अन्तर्गत नाना मानो देखो, सहायक गति करती रहती हैं इसी प्रकार एक शब्द है और शब्द के साथ में मुनिवरो! देखो, एक शिशु है और वो मानो देखो, वाणी का कृत कहलाता है और उसके साथ में मुनिवरो! देखो, नाना परमाणु सहायक बने हुये हैं इसलिये वाणी की जो स्थिति है शब्द बन करके बेटा! अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत हो जाता है। वही शब्द मेरे प्यारे! हमारे यहाँ वही शब्द को बेटा! ऋषि-मुनि प्रयास करते रहे हैं क्या उसको हम यन्त्रों में दृष्टिपात करना चाहते हैं। तो बेटा! देखो ऋषि-मुनियों ने उस मानव शब्दों को अपने यन्त्रों में लाने का प्रयास किया है। मैंने ये वाक्य कई काल में प्रगट किये हैं। भारद्वाज मुनि के यहाँ इस प्रकार के यन्त्र विद्यमान थे जहाँ बेटा! देखो शब्दों का आकार बन करके जिस मानव का वो शब्द है उस मानव का चित्र मुनिवरो! देखो, यन्त्रों में दृष्टिपात आता रहा है। मुझे ऐसा स्मरण है बेटा! ब्रह्मचारी सुकेता और कवन्धि ने तो यहाँ तक जाना है मेरे प्यारे! देखो हजारों वर्षों के क्या, मेरे प्यारे! देखो लाखों वर्षों के जो शब्द हैं उन शब्दों को यन्त्र में ला करके बेटा! उनका दिग्दर्शन किया है। तो आज बेटा! मैं इस विज्ञान में जाना नहीं चाहता हूँ।

याज्ञिक जीवन

विचार ये चल रहा था कि मुनिवरो! देखो, हम याज्ञिक बनें, याग के सम्बन्ध में बेटा! कुछ चर्चायें चल रही थीं। मेरे प्यारे! महानन्द जी मुझे कुछ प्रेरणा देते रहते हैं और प्रेरणा के आधार पर ही देखो यागाम् भविते लोकाम् मेरे प्यारे! देखो हमें याज्ञिक बनना चाहिये। और **वह याज्ञिक बनना चाहिये, जिस याग के पश्चात् मानव के जीवन में एक प्रतिभा का जन्म**

हो जाये। मेरे प्यारे! देखो उसका शुद्धिकरण हो जाये। हमारे यहाँ महाराजा अश्वपति के याग की चर्चा चल रही थी। मेरे प्यारे! उन्होंने वाजपेयी याग किया। वाजपेयी याग उस काल में किया जाता है मेरे पुत्रो! देखो जहाँ, जहाँ वृष्टि और वृष्टि के ब्रहे जहाँ समय-समय पर वृष्टि का अवधान होता है और वह वृष्टि मानो देखो, वाजपेयी याग के उपलक्ष्य में कराई जाती है। मानो देखो, यागाम् भविते लोकाम् प्रजा और राजा दोनों मिल करके उस याग में मुनिवरो! देखो, अपना साकल्य प्रदान करते हैं। राजा वह होता है जो प्रजा को मानो देखो, महान् बनाने में लगा रहता है और वो राजा महान् बना सकता है जो राजा स्वयं महान् हो, पवित्र हो, याज्ञिक हो, मानो देखो, प्रभु की प्रतिभा में रत्त रहने वाला हो, ब्रह्म ज्ञान में रत्त रहने वाला हो। मेरे प्यारे! वो राजा इस समाज को, अपनी प्रजा को ऊँचा बना सकता है जैसे आचार्य कुल में मानो देखो, आचार्य पवित्र होता है, जब जितना आचार्य तपा हुआ होता है उतना ही मानो देखो, उसका विद्यालय तपा हुआ होता है। विद्यालय में ब्रह्मचारी सु-सुसज्जित होते हैं और महान् बन करके मानो देखो, प्राण की धारा को अपनाने लगते हैं। मेरे प्यारे! देखो प्राण प्रवाह से गति कर रहा है मानो देखो, यज्ञों से एक-दूसरे पदार्थ को, एक-दूसरे पदार्थ से मिलान करा रहा है। वही तो बेटा! हमारे यहाँ पुरातन काल में विद्यालयों में बेटा! देखो नाना प्रकार की चिकित्सायें हुआ करती थीं। वे चिकित्सा मानो देखो, उन चिकित्सा में एक प्राण चिकित्सा भी कहलाती थी। मानो देखो, प्राण के माध्यम से मानो रुग्णों का समाप्त होना जो सबसे **महान् विद्या** कहलाती। मुझे बेटा! वो काल स्मरण है महाराजा अश्वपति के यहाँ विद्यालयों में प्रातःकालीन याग के पश्चात् प्राण की विद्या का अवधान कराया जाता। मेरे प्यारे! देखो मुझे वो काल स्मरण है जब प्राण के द्वारा ही मानव बेटा! देखो लोक-लोकान्तरों की यात्रा करता रहा है। क्योंकि ये यन्त्रों में भी तो प्राणों को ही मुनिवरो! देखो, विशिष्ट बनाया जाता है। आज मैं देखो प्राण के सम्बन्ध में कोई विवेचना देना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल ये कि आज का हमारा वाक्य क्या मुनिवरो! देखो,

महाराजा अश्वपति के यहाँ एक याग का आयोजन, याग की वृत्तियाँ मानो देखो, अपने में ओत-प्रोत होती रही हैं। राजा स्वतः अपने में मानो देखो, प्रजा को महान् बनाने के लिए अपने को ऊँचा बनाने में लगे रहते थे। आचार्यकुलों में भी जब आचार्य अपने में पवित्र बन जाता है तो ब्रह्मचारी को ये दीक्षा नहीं होती कि मैं प्रश्न करूँ। वह केवल उनके मानो देखो, क्रियाकलापों को, उनकी महानता को दृष्टिपात करके अपने विचारों को महान् बनाने लगता है और मानो देखो, विद्यालय सजातीय बन जाता है। और जब विद्यालय सजातीय बन गया, तो राजा का राष्ट्र भी सजातीय बन जाता है। तो मेरे पुत्रो! विचार-विनिमय क्या है—तो इसलिये देखो राजा जब याग करता है तो प्रजा याज्ञिक होती है और जब प्रजा में याग होता है तो सुगन्धि होती है वहाँ विचारों की सुगन्धि, क्रियाकलापों की सुगन्धि जब होने लगती है तो बेटा! राजा का राष्ट्र सुगन्धित हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो उसमें एक-दूसरे का विरोधाभास नहीं होता। वह स्वतः अपने में महान् बना करता है। तो बेटा! आज मैं विशेष चर्चा तो तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ।

आज का हमारा वाक्य ये कहता है क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुये अब मानो देखो, अपने को सजातीय बनाते रहें, अपने को उज्ज्वल बनाते रहें जिससे बेटा! देखो हम ज्ञान और विज्ञान मानो देखो, अपनी आभा का प्रतीक बनाते रहें जिससे हमारा जीवन देखो ज्ञान और विज्ञान में रत्त होता रहे। देखो, हमारे यहाँ दोनों प्रकार का ज्ञान-विज्ञान परम्परागतों से ही मानवीय मस्तिकों में नृत्य होता रहा है। और वह नृत्य इसलिये क्योंकि हम जानना चाहते हैं और जान करके क्या चाहते हैं कि हमारी मृत्यु न हो, हम अन्धकार में न चले जायें। मृत्यु का अभिप्राय है कि हम अन्धकार में न चले जायें, हम सभी प्रकाश में रहने के लिए तत्पर रहें। तो मेरे प्यारे! देखो कोई मेरी प्यारी माता, कोई मेरा प्यारा ऋषिवर कोई ये नहीं चाहता कि मैं अन्धकार में रहना चाहता हूँ, वो प्रकाश ही प्रकाश चाहता है। तो मेरे प्यारे! देखो प्रकाश क्या है, **प्रकाश ज्ञान को कहते हैं।** जितना ज्ञान होता है, जितना व्यष्टि से समष्टि में प्रवेश हो जाता है उतना

ही प्रकाश उसके जीवन में उद्‌बुद्ध हो करके बेटा! परमात्मा की सृष्टि में वो महानता, महानता के विचारों को ला करके अपने मानवीयत्व को ऊँचा बनाता रहता है।

आओ मेरे पुत्रो! मैं विशेष चर्चायें तुम्हे देने नहीं आया हूँ। विचार ये देने के लिए आया हूँ क्या मुनिवरो! देखो, हम याज्ञिक बनें और याग में अपने जीवन को मानो देखो, सूर्य से, देवताओं से इन यागों का बड़ा प्रायः समन्वय रहता है। सूर्य की किरणों का बड़ा सहयोग रहता है। मानो देखो, वायु का सहयोग रहता है, अग्नि तो प्रदीप्त रहती ही है। मानो देखो, जल का भी बड़ा उज्ज्वल सहयोग रहता है जिसको हम आपो कहते हैं। वो आपो ज्योति है, वो ज्योति ही मानो देखो, अग्नि है, वो अग्नि ही सूर्य है वह मानो बेटा! देखो वह सूर्य ही मानो देखो, पृथ्वी में नाना प्रकार के व्यञ्जनों को जन्म देने वाली है। हे माता वसुन्धरा! तेरे गर्भस्थल में मानो एक प्रवाह गति कर रहा है, वह गति ही मानो देखो, प्राणस्तव कहलाता है। वह गति मानो ब्रह्मेवत्वम् ब्रह्मा मेरे पुत्रो! देखो पृथ्वी के गर्भ में कहीं स्वर्ण की धातु के रूप में गति हो रही है, कहीं रत्नों के रूप में गति हो रही है, कहीं मानो जल को शक्तिशाली बनाने के रूप में गतियाँ हो रही हैं। तो मेरे पुत्रो! ये प्रभु का कैसा अनुपम विज्ञान है और एक-दूसरे से बेटा! पिरोया हुआ एक माला बनी हुई है। इस माला को हमें विचारना है। इस माला को मुनिवरो! देखो ऋषिवर, वैज्ञानिक अपने में धारण करता रहता है और जो माला में सजातीय बन जाता है। तो आओ मेरे पुत्रो! जैसे वेद के पठन-पाठन करने वाला आचार्य मेरे पुत्रो! देखो वेद मन्त्रों की माला बना लेता है, और वो उसे मानो सूत्र में पिरो देता है और उसे अपने कण्ठ में सजातीय बना लेता है मानो देखो, उदान प्राण के साथ में वो सजातीय बन करके बेटा! उसका उद्‌गम मानो उसका वो उद्‌गीत समय-समय पर गाने लगता है।

आओ मेरे पुत्रो! मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ, विवेचना केवल ये है कि आज मेरे पुत्रो! हम अपने में मानो सजातीय बनें और व्यष्टि से

समष्टि में जाने का प्रयास करें जिससे बेटा! देखो हम मृत्युञ्जय बन जायें, हम मृत्यु से पार हो जायें, प्रभु के राष्ट्र में चले जायें, क्योंकि प्रभु के राष्ट्र में बेटा! रात्रि नहीं होती और जहाँ रात्रि नहीं होती, वहाँ अन्धकार नहीं होता, और जहाँ रात्रि और अन्धकार नहीं होता तो वहाँ बेटा! आलस और प्रमाद नहीं होता। जब ये नहीं होता तो वहाँ सदैव प्रकाश रहता है। तो मुनिवरो! वह प्रभु का राष्ट्र है, **प्रभु के राष्ट्र में बेटा! सदैव प्रकाश-ही-प्रकाश रहता है, और प्रकाश का नाम ज्ञान है, विवेक है, जिसको धारण करके मानव संसार से पार हो जाता है।**

ये है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय हमारा ये कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुये हम मानो देखो, अपने में महान् इस प्रकाश में समाज को ऊँचा बनाने में बेटा! देखो, मैंने इससे पूर्व काल में तुम्हें निर्णय देते हुये कहा था क्या मानव उपाधियों में परणित रहा है, मानव को, समाज को ऊँचा बनाने के लिए मानव को क्रिया में लाने के लिए नाना प्रकार की मानो देखो, उपाधियाँ हमारे यहाँ मानी गयी हैं। जैसे हमारे यहाँ वशिष्ठ उपाधि मानो देखो, ब्रह्मवेत्ता बनाने के लिए और शिवः हिमालय की भाँति मानो देखो, राष्ट्र को ऊँचा बनाने के लिए शिव उपाधि मानी गयी। मानो देखो, हमारे यहाँ नाना शिव हुये हैं। तो मुनिवरो! देखो, वह एक ही शिव नहीं क्योंकि परमात्मा का नाम भी शिव कहा जाता है जो इससे पूर्व काल में हमने प्रगट किया परन्तु राजा का नाम भी शिव है जो हिमालय पर्वत की भाँति देखो अपनी प्रजा को विचारों को ऊँचा बनाने वाला हो उस राजा का नाम बेटा! शिव कहा जाता है। मानो देखो, एक व्रेतकेतु शिव हुये हैं, उनके नामोकरण भी हमारे साहित्य में आते रहे हैं, आज मैं विशेषता में जाना नहीं चाहता हूँ। तो मेरे पुत्रो! देखो विचार-विनिमय क्या हम अपने प्रभु का गुणगान गाते हुये, अपने जीवन को व्यापक बनाते हुये, सुगन्धित बनाते हुये, वायुमण्डल को पवित्र बनाते हुये, आज का हमारा ये वाक्य अब समाप्त होने जा रहा है।

आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः ये कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुये इस संसार सागर से पार हो जायें। ये है बेटा! आज का वाक्य, अब समय मिलेगा तो बेटा! शेष चर्चायें कल प्रगट करेंगे। आज का वाक्य अब ये समाप्त होने जा रहा है, शेष चर्चायें कल बेटा! अपने वाक्य को प्रगट करेंगे। अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

ओ३म् मारथम् आभ्याम् देवाः यम् सर्वं गथाः आभ्याम् देवाः यउसर्वाहाम्।

ओ३म् दधिमाहम् आपायेवम् देवाः वाताहाम्।

महर्षि महानन्द जी–अच्छा भगवन्!

पूज्यपाद-गुरुदेव–ओ३म् शान्ति!

दिनाँक : 8 मई, 1986
समय : प्रातः 9 बजे
स्थान : रामनगर कॉलोनी,
ग्राम कांधला,
मुजफ्फरनगर

नम्र-निवेदन

समिति के बैंक के खाते में दान की राशि हस्तान्तरण करने से दानदाताओं का नाम, पता व उद्देश्य इत्यादि की जानकारी बैंक से प्राप्त नहीं हो पाती इसलिए सभी दानदाताओं से नम्र-निवेदन है कि राशि बैंक के खाते में हस्तान्तरण करने के साथ-साथ समिति की वेबसाइट पर या निम्न किसी भी एक पते पर दान राशि का अन्य विवरण सहित सूचना देने का कष्ट करें–

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
   डी-33, पञ्चशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   के-3, लाजपत नगर-III, नई दिल्ली-110024 मो.न. : 9810887207

गताङ्क से ....

आर्यावर्त्त

उद्‌बोधन

हे मेरे आदि आचार्यजनो! हे मेरे भद्र पुरुषो! मैं तो एक ही प्रार्थना करने आया हूँ वह केवल क्या है? मैं गुरुजी से विरोध किया करता हूँ, गुरुजी को अपशब्द भी कहता हूँ क्यों कहा करता हूँ? केवल अपनी विचारधाराओं को तुम्हारे समक्ष निर्धारित करने के लिये, मेरी पवित्र माता, तुझे उन पुत्रों को जन्म देना है अपनी महानता से, तुझे वह अहिंसा परमोधर्म का पालन करके चलना है माता, जिससे गऊओं की रक्षा हो। एक गऊ जीवन भर दूध देती है, उसके जीवन से देखो, सहस्त्रों प्राणियों को लाभ पहुँचता है। आज एक गऊ का भक्षण किया जाये, एक उसी गऊ को नष्ट किया जाये, अधिक से अधिक देखो, उससे कुछ एक सौ प्राणियों की उदर की पूर्ति हो सकती है, परन्तु यदि उस गौ को यदि जीवित रहने दिया जाये, तो वह जो गऊ अपने जीवन में देखो, सहस्त्रों प्राणियों की पूर्ति करती है, अब कितना लाभ है उससे, परन्तु परमात्मा ने दिया है इसीलिए की अधिक से अधिक लाभ प्राप्त किया जाये। आज के मानव ने क्या कर लिया, कि देखो, इससे देखो, अपने गृणी में अपने ऐश्वर्य के साधन देखो, अपनी उदर की रसना की पूर्ति के लिये साधन बना लिया है। हे मेरे आचार्यजनो! मैं तो केवल यह उच्चारण करने आया हूँ, जिस समय यह भारत भूमि, जिस समय महाराजा भरत, अरे! वह बालक, वह माता कैसी पवित्र माता, हे माता! तू भरत को जन्म देने वाली है और भरत जैसे जो सिंहों के, सिंहनी के पुत्रों से किलोल करते थे, सिंहनी के मुख से विराजमान होकर के यह कहते, तुझे मैं नष्ट कर दूँ, अरे! वह उसके बालक देखो, सिंहनी से विनोद करते थे। माता तू तो वह माता है, अरे! अहिंसा परमोधर्म माता है, माता! तू वह माता न बन जिससे देखो, तेरे गर्भ से विष उगलने वाला बालक उत्पन्न हो, आज अमृत उगलने वाले बालक को जन्म दे, तू दयानन्द को क्यों नहीं जन्म देती? पुनः से

तू शङ्कर को क्यों नहीं जन्म देती? भगवान् राम को क्यों नहीं जन्म देती? आज तू पतञ्जलि व जैमिनी को जन्म क्यों नहीं देती? परन्तु तेरी वह विशेषता कहाँ चली गई माता! तेरी वो उज्ज्वलता कहाँ चली गई, तूने गार्गी बनने के लिये भारत भूमि में जन्म लिया, परन्तु यहाँ यदि तू मांस इत्यादियों का, भक्षण करके आज तू अपनी वीरता का साधन जानती है तो जान क्योंकि तुझे मनुष्य कुचलते रहेंगे संसार में, मनुष्य तुझे अपने आधीन बनाते रहेंगे, देखो, तुझे नष्ट-भ्रष्ट करने की योजना बनाते रहेंगे। माता तूने इस भारत भूमि में जन्म लिया, आर्यों की भूमि पर जन्म लिया, ये वो भूमि है, जहाँ भगवान् राम की पतिका थी देखो, जहाँ दूसरे के अधिकार को नहीं लिया जाता, राम को जानते हो, मेरे गुरु राम की चर्चायें, राम की विशेषता नित्य प्रगट किया करते हैं, कृष्ण की चर्चा नित्य प्रति प्रगट किया करते हैं, राम का यह सङ्कल्प था, कि मुझे अपने जीवन में दूसरे के अधिकार को नहीं लेना है, रावण ने देखो, आ करके भारत को अपना लिया था लङ्का से आ करके, पातालपुरी को अपना लिया था और द्रुति राजा को अपना लिया था त्रिपुरी के हिस्से में राज था उसका, केवल सूक्ष्म-सा राष्ट्र रह गया था। भगवान् राम ने देखो, राष्ट्रों को विजय करके, और उनके दुराचार को समाप्त करके, उनका राष्ट्र उन्हीं को अर्पित कर दिया। यह भावना है एकता की, यह भावना है समाजवाद की। आज हम समाजवाद को लाना चाहते है, आज केवल उच्चारण करने से समाजवाद नहीं आयेंगा, आज राष्ट्र की नीति, राष्ट्र को उचित बनना है, तो ब्राह्मणों को, बुद्धिमानों को करना है आगे, राजा से कहो कि हे राजा! तू कहाँ है, और माताओं को विचारना था, ये माताओं को, अपने जीवन में, वेद के स्वाध्याय, वेद का पठन-पाठन करती और गायत्री जप करके बालक को जन्म देना है, जिससे दुराचारी राजा को नष्ट-भ्रष्ट करने वाला बालक होगा। आज कहाँ हो तुम? परन्तु कहाँ हो और किसलिये आये हो संसार में, और क्या तुम्हारा उद्देश्य था, क्या बन गया संसार, परन्तु देखो, यहाँ यदि मानव शुद्धता नहीं करेगा, आप जानते हो कि प्रकृति के कितने प्रकोप है। मुझे प्रतीत है मुझे गुरुदेव की अनुपम कृपा से मुझे सूक्ष्म-सा ज्ञान है, वास्तव में तो किञ्चित है। परन्तु बुद्धिमानों की सभा में, तो बहुत ही सूक्ष्म है। आज मैं जैमनियों की सभा

में विराजमान हो करके, तो बहुत ही सूक्ष्म-सा किन्तु मेरा आदेश है। परन्तु जानते हो कि प्रकृति का प्रकोप है, यह क्यों है? आज, हम संसार की क्रिया करते हैं, प्रकृति का प्रकोप क्या है, कोई जल का प्रवाह आ रहा है देखो, आज अन्तरिक्ष से जल की वृष्टि हो जाती है, देखो, बिना समय के वृष्टि हो जाती है, आज कहीं देखो, वायु का प्रकोप आता है, कहीं अग्नि का प्रकोप आता है, ये सब कुछ क्या हो रहा है? कहीं देखो, भूमि में आ करके राष्ट्र की निधि नष्ट हो जाती है, यह क्या है मानो देखो?, वह जो तुम्हारा स्वार्थ, इस अन्तरिक्ष में सूक्ष्म रूपों से रमण कर रहा है, वह सूर्य की किरणों में, वह समुद्रों में जा करके वैसा ही तुम्हारे द्वारा पाप आज तुम्हारे समक्ष आता चला जा रहा है। आज तुम कहाँ हो? परन्तु विचारों, तो सही सिद्धान्त को, आज तुम वैदिक साहित्य को देखो, तो इसमें क्या है।

पाप पुण्य स्थली

मुनिवरो! देखो, महर्षि जैमिनी जी ने क्या और देखो, अग्रणी अच्युतम् भवनाति महाराजा घटोत्कच्छ ने महाराजा अर्जुन ने देखो, यज्ञ में यह था क्या क्रणा गच्छति कर्मणा यह मानव जब वृत्ति हो जाता है, अपने कर्त्तव्य से दूरी हो जाता है, आज के यह प्रकृति के प्रकोप आते हैं, अन्न नष्ट हो जाता है। आज तुम्हारा देखो, और नाना प्रकार की सम्प्रति समाप्त हो जाती है। परन्तु यह सब कुछ तुम्हारे पाप और पुण्य कर्मों से ही होता है। परमात्मा तो क्या करता है, परमात्मा तो निर्लेप है, परमात्मा तो तुम्हारे पाप पुण्य कर्मों की लेखनीबद्ध कर रहा है। और कहाँ उसका वह लेखनीबद्ध वाला स्थल कहाँ है, मुनिवरो! वह न्यायालय कहाँ है? वह न्यायालय प्रकृति में और न्यायालय तुम्हारा जो अन्तःकरण है, उसी पर तुम्हारे पाप-पुण्य कर्म अङ्कित हो जाते हैं और अङ्कित हो करके वह पाप अग्रणी बन करके, उस समय तुम्हारे जीवन का विनाश कर देते हैं।

अन्तःकरण को ऊँचा बनाने की प्रेरणा

आज तुम विचारों, सूक्ष्मता में विचारो, तो मेरे गुरुदेव बहुत सूक्ष्म से रहस्य

नित्य प्रति प्रगट किया करते हैं। परन्तु मैं तो केवल इतनी ही चर्चा करने आया हूँ, आज मैं गाथा तो बहुत ही उच्चारण करता, परन्तु एक तो अपने हृदय की इस वार्त्ता को निकास दो कि आज हम यह मानते रहें कि पश्चिमी राष्ट्रों से यह भौतिक विज्ञान आया, परन्तु विज्ञान तुम्हारे द्वारा था, आज तुम्हें पुनः से वैज्ञानिक बनने का प्रयत्न करना चाहिये, आज तुम बुद्धिमान बनों, आज तुम्हारा देखो, यह विश्व आदर करेगा। विश्व आदर पुनः से तुम्हारा किस प्रकार कर सकता है? आज विश्व में आदर इस प्रकार से नहीं होगा, विश्व आदर इस प्रकार से नहीं करेगा, किसी प्रकार से, राजा हो, संन्यासी हो, महात्मा हो और राष्ट्र का कर्मचारी हो, परन्तु द्वितीय राष्ट्र उसका आदर किस काल में करते हैं जब करते हैं, जब उसका आन्तरिक भाव पवित्र बन जाता है, आन्तरिक भावना पवित्र बन जाती है, राष्ट्र में, राजा का मान द्वितीय राष्ट्रों में, उस काल में होता है, जब राजा अपनी प्रजा को नियन्त्रण में करता हुआ और अपने अन्तःकरण को ऊँचा बना देता है और निःस्वार्थ बन करके कार्य करता है, जहाँ प्रजा में, राष्ट्र में स्वार्थ रहेगा, देखो, आज वह विनाशता को प्राप्त होता चलेगा।

पति-पत्नी

आज मैं क्या दृष्टिपात कर रहा हूँ संसार में, पति और पत्नी में स्वार्थ की भावना, पत्नी यदि अपने पति से प्रीति करती है तो स्वार्थ को लेते हुए, आज यदि आधुनिक काल की माताएँ किस प्रकार की हैं, यदि आज की माताएँ, आज के पिता, यदि देखो, महाराजा हरिश्चन्द्र वाली वार्त्ता कर दें, तो माता कहेगी तुम्हारा मार्ग यह है, मेरा यह है। परन्तु मुझे आप से कोई प्रयोजन नहीं। परन्तु माता वह है, माता वह है जो पति की साथी हो, पति को आपत्ति में भी आपत्ति सहन करने वाली हो, माता सीता की भाँति। हे माता! यहाँ वह माता रही है, माता गार्गी जो नग्न रहती थीं, नग्न और त्याग और तपस्या में तल्लीन और देखो, संसार को चकित बनाने वाली। मैं आज, मुझे गुरुदेव ने संक्षिप्त आदेश दिया था, सूक्ष्म समय रह रहा है, समय समाप्त होने जा रहा है। परन्तु मैं गुरुदेव का अधिक समय लेना नहीं चाहता। परन्तु मुझे गुरुदेव ने समय दिया, तो मैंने

उसे स्वीकार कर लिया और मैंने सूक्ष्म से शब्दार्थों में कुछ चर्चायें कीं, परन्तु मेरी यह चर्चायें कटुता को तो अवश्य लेती हुई थी, परन्तु यथार्थ जब उच्चारण होता है तो उसमें कटुता प्रतीत होती है।

आज परन्तु देखो, आज प्रत्येक प्राणी को विचारना है, स्वर्ग बनाना है, और यह भी निश्चित है कि यह धर्म प्रिय गुणा सुति आज तुम्हें इस संसार को अग्नि से दूरी करना है। हे भोले आचार्य! भोली माताएँ! भोले भक्तजनो! आज तुम जब पश्चिम का प्राणी जब तुम्हारे द्वारा आता है, उसको वह शिक्षा दो, उसको वह उपदेश दो, जिससे देखो, यहाँ से ले करके जाये, और यदि वह अपनी असत्यता को यहाँ त्याग जाये और उसको यदि तुमने उसे अपना लिया, तुममें कोई मानवता नहीं है। परन्तु मानवता तुम्हारी उसी काल में है पश्चिम से आये अपने पशुपन को ले करके, तुम्हारे द्वारा आये, गुरुओं के द्वारा आये और गुरु माता और गुरु से वह शिक्षा ले, जिससे वह तुम्हारे प्रभाव में आ करके, और अपने राष्ट्र में, क्योंकि यह भारत भूमि है। वह आर्यावर्त्त है यहाँ देखो, राम और कृष्ण की पतिकाएँ थीं, वहाँ देखो, उनको क्यों नहीं अपनाते, आज तुम्हें अपनाना नाना प्रकार की किलिष्टता अपनाना, आज इससे क्या होता है, इससे तुम्हारा जीवन विनाश को प्राप्त होता है। आज तुम यह जानने लगो, कि आज देखो, पश्चिम के आहार को, पश्चिम के व्यवहार को, उसकी वेशभूषा को, अपना करके हम, आज अपने राष्ट्र को आर्यावर्त्त बना सके, या हम आज इस पर शासन कर सकें, तो कदापि नहीं कर सकोंगे, क्यों नहीं कर सकोंगे? उसका कारण कि जहाँ जैसा प्रभाव होता है, जहाँ जैसी संस्कृति होती है, परन्तु देखो, वहाँ उसका वैसा ही वातावरण होता है, और **अपना वातावरण अपने अनुकूल बनाना पड़ता है,** देखो, उस काल में राष्ट्र को चला सको, अन्यथा राष्ट्र भी नहीं चलेगा।

त्याग और तपस्या से ज्ञान को अपनाने की प्रेरणा

आज मैं, जो भी संसार में तुम्हारे द्वारा आये उनकी अच्छाईयों को अपनाना और अपनी अच्छाईयों को उन्हें दे देना, जिससे देखो, वह तुम्हारे सम्पर्क में अच्छाईयों वाले बन जाये और तुम उनके सम्पर्क में आ करके, सुन्दर बन जाओ।

ये अपनाओं, आज उनकी वेशभूषा को अपनाने से कोई प्रयोजन नहीं, उनके कर्मकाण्ड को अपनाने से कोई प्रयोजन नहीं, आज तुम्हें उनकी वाणी को अपनाने से कोई महाप्रयोजन नहीं है, यह मूल वाक्य नहीं है, परन्तु देखो, आज तुम उसको अपनाओं जिससे तुम्हारे द्वारा आये, तुम वह अग्नि हो, कि हे मेरी भोली माताओ! हे भोले भद्र पुरुषो! तुम वह अग्नि हो, जो तुम्हारे छूने मात्र से मानव श्रेष्ठ बनता है, वह कौन-सी अग्नि, मेरे गुरुदेव ने कल चर्चायें की थीं, ये वो अग्नि है जो महाराजा जैमिनी यहाँ से, वेदव्यास यहाँ से चले गये, उन राष्ट्रों में पहुँचे जहाँ देखो, **भयतानी प्राणी** रहते थे, जिनमें कोई सभ्यता नहीं थी, केवल क्या करते थे, कि मांस को भी, जैसे का तैसा ही, उसको अग्नि के मुख में भी न दिया उसको वैसा का वैसा ही पान कर लिया। परन्तु देखो, वेदव्यास अपनी पतिका को ले करके चले, ओ३म् की पतिका को, वेद की पतिका को ले करके चले और वेद की पतिका का जब सुन्दर आदेश दिया तो क्या हुआ कि वह ऋषि के प्रभाव में आ करके, आज उनका जीवन कुन्दन बन गया। कुन्दन बन गया, तुम वह अग्नि हो। हे आर्यवर्त्त के रहने वाले प्राणी आर्यों! तुम वह अग्नि हो, तुम्हारे छूने मात्र से मनुष्य, किसी काल में श्रेष्ठता में प्रवेश हो जायेगा, श्रेष्ठ बनता था। परन्तु आज तुम वह कीचड़ बन गये कि तुम्हारे सम्पर्क में आ करके वह कीचड़ में आता है। कीचड़ ही बन जाता है प्राणी। परन्तु उसको न अपनाओं, केवल अग्नि को लाने का प्रयत्न करो त्याग और तपस्या में, केवल तुम अग्नि को तभी ला सकते हो, जब तुम अपने स्वार्थ को त्याग दोगे, स्वार्थ को त्याग दोगे त्याग में ही सब कुछ आता है यह जितना भी असीम परिवार है और जितना परिवार, परन्तु यह कुछ परिवार तुम्हारी निःस्वार्थता का न होना है। यही तुम्हें विनाश को ले जायेगा, यही तुम्हें असभ्य बनाता है, और इसी से तुम दूसरे के अधीन बन जाते हो।

अब मुझे चर्चा, गुरुदेव कल का समय और देंगे, तो मैं कल और भी उच्चारण करूँगा। केवल आज का यह आदेश समाप्त हो गया, और जो मेरे से कोई सूक्ष्मता, कोई हीनता हो गई है उसके लिये गुरुदेव मुझे क्षमा भी अवश्य कर देंगे। आज तो मैं केवल यही आदेश प्रगट करने आया था, मेरे गुरुदेव ने जो संग्राम का, विश्व संग्राम का, भौतिक विज्ञान का जो निर्णय दिया, परन्तु उसमें

कुछ समय है, उसमें समय यह तो आगे तुम्हें समय निर्णय करता चला जायेगा। परन्तु आज का यह हमारा आदेश समाप्त और इस अग्नि से दूरी होने के लिये तुम्हें वास्तव में निःस्वार्थ बनना है, पवित्र बनना है। आज यहाँ प्रत्येक माताओं को, प्रत्येक पुरुष को, पिता को, ऋषि को महान् से महान् बनना है जिससे तुम परमात्मा की सृष्टि को, अपनी मानवीयता को और अपने राष्ट्र को सबको ऊँचा बना सको।

कल मेरे पूज्य गुरुदेव! ने एक वाक्य कहा था मन, कर्म, वचन, कोई वाक्य नहीं, परन्तु मन, कर्म, वचन से जहाँ तक पाप का सम्बन्ध है यह कैसे नहीं होगा? यह उसी काल में नहीं हो सकेगा, जब तुम्हारे द्वारा स्वार्थ नहीं होगा, और जब तक तुममें स्वार्थ है, तब तक तुम देखो, मन, कर्म, वचन से तीनों प्रकार के पाप से दूरी नहीं हो सकते, अगर तुम राष्ट्र में रहे हो राष्ट्र का पालन करो। राष्ट्र के उद्देश्य को ले करके चलो। परन्तु उसमें स्वार्थवाद न हो, राजा है, राजा राष्ट्र का पालन करता है, प्रजा का भी अधिपति है उसे कर्म करने से प्रयोजन है, उसे दूसरों के, प्रजा के ऐश्वर्य को, अपने ऐश्वर्य में लाना उसके लिये पाप हो जाता है। उससे देखो, इसी का नाम स्वार्थ है और देखो, **ऋषि का नाम निःस्वार्थ है।** आज स्वार्थ को त्याग दो, निःस्वार्थ अपने जीवन में लाते चले जाओ, तुम्हारा जीवन श्रेष्ठ बनता चला जायेगा। महान् बनता चला जायेगा। तुम पाप कर्मों से दूरी हो सकते हों, अन्यथा नहीं हो सकते।

आर्य

मुझे गुरुदेव कल सूक्ष्म समय देंगे, तो मैं यह भी वर्णन करूँगा, कि संसार को यह आर्य ही श्रेष्ठ बनाएँगे, जब भी बनाएँगे, ये भी है। परन्तु आर्य कहते किसे हैं? यह गुरुदेव नित्य प्रति व्याख्या किया करते हैं, आर्य उसी को नहीं कहते, आज के संसार ने तो यह अपना लिया कि ऋषि दयानन्द को जो मानता है वही आर्य है, परन्तु कोई कहता है कि जो ऋषियों के वाक्यों पर चलता है वही आर्य है, परन्तु कोई कहता है आज के मनुष्य को जब मुझे किसी काल में दृष्टिपात करता हूँ तो कहता है मैं तो बड़ा आर्य समाजी हूँ, कट्टर हूँ, परन्तु

देखो, इससे कुछ नहीं बनेगा, आज कट्टर से ही कुछ नहीं बनेगा, परन्तु उस समय बनेगा, जब तुम अपनी कट्टरता को त्याग दोंगे, यहाँ कट्टरता से कोई मानव ऊँचा नहीं बनता। आज मानव जब ऊँचा बनता है, जब अपने कट्टरपने को त्यागता है, शुचिता को अपनी वेदी पर लाता है, ऋषियों के ऋण को अपने अन्तःकरण में धारण करता है, जब मानव आर्य बनता है संसार में अन्यथा, यहाँ आर्य नहीं बनोंगे, परन्तु देखो, ऋषि दयानन्द वास्तविक आर्य थे, शङ्कराचार्य वास्तव में आर्य थे, परन्तु देखो, उनके अनुयायी कुछ और भी वास्तविक आर्य थे। ऋषि दयानन्द के आज भी कुछ आर्य हैं, कुछ वास्तविक आर्य हैं। परन्तु अधिकतर कैसे, जिनकों मैं तो नहीं उच्चारण कर सकता। मैं उच्चारण क्यों करूँ, क्योंकि उच्चारण करने का समय नहीं, आज मैं उसी समय कोई, यहाँ नहीं, परन्तु देखो, यहाँ आज वह आर्य कहते हैं कहीं वेद की चर्चा होती हो, कहीं वास्तविक विवेचन हो रहा हो परन्तु उनके प्रतिकूल हो, तो कहेंगे कि यह सब पाखण्ड है कि अनुकूल हो, अनुकूल होना चाहिये, उनके विचारों के अनुकूल हो, वह यौगिकता से भरा हुआ नहीं होना चाहिये, परन्तु वह उनके अनुकूल हो, वह बड़ा सुन्दर है। परन्तु यहाँ भी सोचों, विचारों बुद्धिमानता ही, केवल बुद्धि ही नहीं कहती यहाँ तो ऐसा सूक्ष्म रहस्य की जो बुद्धि से परे वाला जो वाक्य विचारने वाला हो, यथार्थता में देखना चाहते हो, ऋषि दयानन्द को देखो, आज तुम और भी यथार्थता में देखना चाहते हो, महात्मा शङ्कराचार्य को देखो, गुरुओं को देखो, आज तुम महर्षि पतञ्जलि के जीवन को दृष्टिपात करो। आज तुम वास्तव में आर्य बनते चले जाओंगे, यहाँ आर्य ही आते हैं और जब यहाँ आर्य आते हैं जब ही यह संसार श्रेष्ठ होता है यही नहीं, संसार श्रेष्ठ होता है। परन्तु देखो, आज का यह मेरा आदेश समाप्त होने जा रहा है, मेरे गुरुदेव कल मुझे समय देंगे, कल मैं आर्य की सुन्दर व्याख्या करूँगा, परन्तु समय की वार्त्ता है, समय मिलेगा, तो करूँगा, अब यह आदेश हमारा समाप्त होने जा रहा है। परन्तु देखो, आज यह आदेश मेरे गुरुदेव, इन सूक्ष्म से आदेशों में बहुत-सी अशुद्धियों भी हुई होंगी, परन्तु इनमें बहुत से कटु शब्दार्थ भी हुए होंगे, मैं गुरुदेव से इन सबकी क्षमा चाहता हूँ।

पूज्यपाद-गुरुदेव

हास्य..... धन्यवाद! मेरे आदि ऋषि मण्डल! आज तुमने देखो, इस महा महानन्द की चर्चायें सुनी, ये महा आनन्द है परन्तु यह आनन्द कर देते हैं। परन्तु जहाँ आनन्द है वहाँ इनके वाक्यों से देखो, मानव निराश भी हो जाता है। परन्तु इनके वाक्यों को पान करके, मनुष्य मार्ग नहीं त्यागते, केवल मनुष्य के हृदयों में एक कम्पन्नता उत्पन्न हो जाती है। कम्पन्नता तो उत्पन्न हो जाती है और क्रान्ति भी आती है। हमारे हृदय में क्रान्ति ला देते हैं किसी काल में ये, परन्तु इनके वाक्य वास्तव में सुन्दर हैं, इनके लिये ही सुन्दर हैं, परन्तु उनके लिये ही सुन्दर हैं, देखो, आज इन वाक्यों को भी प्राणी को स्वीकार करना चाहिये, परन्तु जैसा इन्होंने कहा है, मुझे तो इनका वाक्य अधूरा प्रतीत हुआ, कल समय मिलेगा, तो और सूक्ष्म आदेश मिलेगा, क्योंकि अग्रणीय भूतस्सुता वाक्य इनका अशुद्ध नहीं रहना चाहिये और अधूरा नहीं रहना चाहिये। अब चलो, कोई वाक्य नहीं।

संसार की रचना का रहस्य

आज का यह आदेश समाप्त होने जा रहा है। आज के आदेशों का हमारा अभिप्रायः क्या था, कि प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्याएँ, प्रत्येक ऋषि मण्डल, आज के संसार में बहुत विचार करके चलना होगा, महानता को अपनाना होगा, **वास्तविक मार्ग को अपनाना होगा और यह भी निश्चित है कि तुम इस मार्ग को आज नहीं अपनाओंगे, कल अपनाओंगे,** किसी न किसी काल में तुम्हें अपनाना ही होगा। भगवान् कृष्ण ने एक आदेश अर्जुन को दिया था और अर्जुन से यह कहा हे अर्जुन! एक समय वह आता है कि मनुष्य को मेरे मार्ग को अपनाना ही पड़ता है। तो यह उनका कितना सुन्दर शब्द है, यह कितनी सुन्दर प्रतिभा है। उन्होंने एक वाक्य कहा कि मेरे आङ्गन को, मेरे इस मार्ग को अपनाना ही पड़ेगा, प्रत्येक मानव को, कितना सुन्दर शब्द है। मुनिवरो! इसका अभिप्रायः यह है कि **एक समय वह आयेगा, वह आता है प्रत्येक व्यक्ति के लिये, क्या उसे वेद की ज्योति के मार्ग को अपनाना ही पड़ता है,** चाहे वह नास्तिकवाद में चला जाये, चाहे आस्तिकवाद में रहो, पापाचार में रहो, परन्तु उसे यह मार्ग,

एक समय अपनाना पड़ता है, यह तो प्रतीत नहीं किसी भी काल में अपनाएँ, और यह भी है कि दैत्य और देवताओं का भी यहाँ संग्राम होता रहता है।

आज के बेटा! इनके शब्दार्थों से ऐसा प्रतीत हुआ ऋषि ने, महानन्द जी ने बेटा! देखो कि दैत्य और देवताओं का संग्राम अब भी चलता रहता है। यहाँ दैत्यों और देवताओं का संग्राम चलता रहेगा, जब तक यह सृष्टि रहेगी। क्योंकि सृष्टि की रचना जो हुई है, यह विभाजन करने वालों की रचना है। यह विभाजन करने वाला कौन है सृष्टि में? जैसे मुनिवरो! हमारे शरीर में नित्य प्रति एक नवीन सृष्टि रची जाती है और अब वह विभाजन करने वाला हमारे शरीर में मनीराम बैठा हुआ है, इसी प्रकार इस सृष्टि में, परमात्मा की सृष्टि में विभाजन करने वाला वही देखो, कोई न कोई तत्त्व प्रकृति का विभाजन करता रहता है, परन्तु विभाजन करता रहता है और इस विभाजन से ही संसार की रचना होती है। जब परमपिता परमात्मा से यह महत् (महत्त्व) चलता है तो महत् यह प्रकृति में, यह सूक्ष्म प्रकृति से मिलान करता है और यह मिलान करके मुनिवरो! देखो, प्रकृति के मिलान करने के पश्चात्, एक-दूसरे को विरोध में ला देता है। कैसे विरोध आता है? जल का, अग्नि का विरोध हो जाता है। इस महत् के कारण पृथ्वी का और जल का विरोध हो जाता है। परन्तु विभाजन होता रहता है, विभाजन होने का नाम संसार की रचना है। मानव के शरीर की जो रचना है वह भी विभाजन होने की है। रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण इसमें समाया हुआ है, समाहित है। हमारे शरीर में, परन्तु यह जो मनीराम है यह मात्रा बनाता रहता है इनकी रजोगुण, सतोगुण, तमोगुण की मात्रा बनाता रहता है, इनको सूक्ष्मता में, न्यूनता में अधिकता में ये विभाजन करता है। जब सतोगुण प्रधान हुआ तो सतोगुण ला दिया। तमोगुण प्रधान हुआ तो तमोगुण में मात्रा अधिक हो गई, जब रजोगुण प्रधान हुआ तो रजोगुण में मात्रा हो गई। तो यह विभाजन करता रहता है। इसी प्रकार यह संसार जो यह विभाजन करने वाले यह विभाजन होता रहता है, इसलिए संसार की रचना हमें प्रतीत होती है और जहाँ एक-दूसरे से मिलान हो जाता है, तो यह हमें यह जो प्रत्यक्ष है यह हमें अप्रत्यक्ष हो जाता है। किस प्रकार होता है, बेटा! यह इस प्रकार होता है हमारे शरीर में मनीराम देखो, रजोगुण, तमोगुण की विभाजनता करता है, मन और बुद्धि की

विभाजनता अपने में मन और बुद्धि में विभाजनता लाता है और आत्मा के गुण है ज्ञान और प्रयत्न, उनका विभाजन होता रहता है, इनको जब भी यह ज्ञान और प्रयत्न दोनों एक स्थान पर आ जाते हैं, उस समय इसको मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। और देखो, जहाँ ज्ञान और प्रयत्न दूरी रहते हैं विभाजन रहता है, तब तक यह मानव पाप भी करता है, नाना प्रकार का पृथक्कवाद पर विश्वास होता है और जब यह विभाजन करने वाली वस्तु को त्याग देता है, उस काल में उस प्राणी का कल्याण हो जाता है, यह यौगिक बन जाता है, मानवत्व में विचरण करता है, आर्य बन जाता है। अब बेटा! यह आदेश समाप्त हो गया है, कल मुझे समय मिलेगा तो कल शेष चर्चायें प्रगट करेंगे।

महर्षि महानन्द जी–धन्य हो प्रभु!

पूज्यपाद-गुरुदेव–मुनिवरो! यह आज का आदेश हमारा समाप्त होने जा रहा है, कल समय मिलेगा तो शेष चर्चायें। अब वेद का पाठ होगा सूक्ष्म-सा, उसके पश्चात् वार्त्ता समाप्त। आज महानन्द जी ने जो कहा है वह बहुत ऊँचा और विचित्र है, मुझे तो प्रतीत नहीं था कि इतना वाक्य भी यह जानते हैं, परन्तु बहुत कुछ जानते हैं। हास्य....!

महर्षि महानन्द जी–गुरुदेव! आप हमारा विनोद भी कर रहे हैं हास्य...!

पूज्यपाद-गुरुदेव–बेटा! यह विनोद आपने भी अग्रणी भवति नहीं। बेटा! नहीं, सुन्दर है।

महर्षि महानन्द जी–अच्छा गुरुदेव!

ओ३म् आदृ दावसु वनो दृश्चता वर्णो प्राभादि ग्रताः भना व्रताः मानं देवाः।
ओ३म् सर्वाञ्चते निधा प्रायणाः वाचा रथि वणु प्रागणा देवाः।
ओ३म् ब्रह्मणो देवं ददातु महा नमस्ते स्तेते नमोः नमोनः स्वा।

दिनाँक : 21 जून, 1969
स्थान : रामलीला मैदान, अलीगढ़।

॥ ओ३म् ॥

ब्राह्मण की व्याख्या

जब गायत्री के गर्भ में और मनस्तत्व को विचार विनिमय करने लगे। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है, ऐसा मुझे स्मरण है कि बारह वर्ष तक उन्होंने इस प्रकार का कठोर तप किया। बारह वर्ष के पश्चात् महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने एक पोथी का निर्माण किया। जिस पोथी का नाम ''शतपथ ब्राह्मण'' कहा जाता है। वेद को जाना। उस पोथी में सबसे प्रथम पृष्ठों में यह कहा है कि **ब्राह्मण कौन है?** ऋषि ने उत्तर दिया कि ब्रह्मचारी ही ब्राह्मण है। ब्रह्म को जानने वाला ब्राह्मण है, जो ब्रह्म को चरता है उसको ब्राह्मण कहते हैं। तीन शब्द हैं, तीनों शब्द ही एक दूसरे के पर्यायवाची है। एक ही सूत्र में आने वाले तीनों शब्द हैं। ब्रह्मचारी वही होता है जो ब्रह्म को चरता है, ब्रह्मचर्य की ऊर्ध्वगति बनाता है, उसे ब्रह्मचारी कहते हैं और जो ब्रह्मचर्य की ऊर्ध्व गति बना करके ब्रह्मरन्ध्र में मानो प्रतिभा को ले जाता है, वह ब्रह्म को जानता है, वह ब्रह्म की आभा को चरता है। कैसे चरता है? इस प्रकृतिवाद पर सर्व मण्डल पर उसका अधिपत्य हो जाता है और जो इस आभा को चरता है, वही ब्रह्म को जानता है, वही ब्राह्मण कहलाया जाता है।

वेद का ऋषि कहता है 'ब्राह्मणों कृतम् व्रिह अस्ताः।' तीनों ही शब्द एक ही सूत्र में पिरोने वाले हैं। एक सूत्र में पिरो देना चाहिए। ब्राह्मण कौन है? जो ब्रह्म के गर्भ को जानता है। वह माँ वसुन्धरा है, जो वसुन्धरा के गर्भ को जानता है—वसुन्धरा का गर्भ क्या है? उसका गर्भ ही यह प्रकृतिवाद है, इस पर अधिपत्य करना और ब्रह्म की चेतना में चेतनित कराना यही ब्रह्म को जानना है।

यज्ञ-पात्र

बेटा ! आज मैं ब्रह्मवेत्ता बनाने नहीं आया हूँ। महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि

महाराज ने आगे कुछ लोक युक्तियाँ प्रकट करते हुए कहा कि एक समय देवासुर संग्राम हो गया था और वह देवासुर सँग्राम बहुत समय तक चलता रहा। ऐसा कहा जाता है कि एक समय देवताओं ने दैत्यों को विजय कर लिया। जब दैत्यों को विजय कर लिया तो देवताओं की सभा में एक आनन्द की ध्वनियाँ होने लगी। ऐसा ऋषि ने कहा है कि देवताओं की सभा में एक वृक का जन्म हो गया। जब उस वृक का जन्म हो गया तो उस वृक के मुखारविन्दु से ध्वनि उत्पन्न होती है, उस ध्वनि को जो भी पान करता है वही देवताओं का बनने लगा। जब यह सँसार देववत् बनने लगा, देवताओं का बनने लगा तो शुम्भ, निशुम्भ तथा रक्तबीज आदि दैत्यों ने एक सभा की और अपनी सभा में विरोचन सभापति को निमन्त्रण दिया और महाराजा विरोचन से कहा कि महाराज देवताओं की सभा में वृक का जन्म हुआ है। उसके मुखारबिन्दु से ध्वनि उत्पन्न होती है और उस ध्वनि को जो भी पान करता है वही देवताओं का बन जाता है और यह सँसार देवताओं का बन रहा है। हम दैत्यों का क्या बनेगा? महाराजा विरोचन ने कहा कि भाई इसको छला जाए। तो शुम्भ, निशुम्भ तथा रक्तबीज तीनों दैत्यों ने अपना क्रम बनाया कि आज हम मध्य रात्रि में इस वृक पर आक्रमण करेंगे। वृक को भी ज्ञान हो गया था कि तू दैत्यों के द्वारा छला जाएगा। वृक ने अपनी उस ध्वनि को रेणुका को समाहित कर दिया। वह ध्वनि जो देवताओं की धरोहर थी, वह तो रेणुका में समाहित हो गई। मध्य रात्रि मैं दैत्यों ने आक्रमण किया तो वृक छला गया। महाराजा विरोजन जी ने जब मन्थन किया तो उसमें वह ध्वनि नहीं थी जिससे यह सँसार देवताओं का बनता था।

उस समय वह बोले कि हे दैत्यो ! इसमें वह ध्वनि नहीं है जिससे यह सँसार देवताओं का बन रहा था। उन्होंने कहा कि महाराज वह ध्वनि कहाँ गई? क्या वह ध्वनि रेणुका में समाहित हो गई। अब रेणुका को छलने का क्रम बनाया जाए। विचार बनाते ही रेणुका को ज्ञान हो गया था कि आज तू दैत्यों के द्वारा छली जाएगी। उन्होंने उस ध्वनि को अग्नि में समाहित कर

दिया। वह ध्वनि तो अग्नि में समाहित हो गई और जब रेणुका को मध्य रात्री में छला गया और विरोचन जी ने मन्थन किया तो उसमें वह ध्वनि नहीं थी, जिससे यह सँसार देवताओं का बन रहा था। उन्होंने कहा कि वह ध्वनि अग्नि में समाहित हो गई। दैत्यों ने कहा कि अब हम अग्नि को छलेंगे और अग्नि को छलने का क्रम बनाया। परन्तु अग्नि को यह ज्ञान हो गया कि अब तुम छली जाओगी दैत्यों के द्वारा। अग्नि ने देवताओं की उस धरोहर ध्वनि को यज्ञ के दस पात्रों में समाहित कर दिया।

वह ध्वनि तो यज्ञ के दस पात्रों में समाहित हो गई। अग्नि को छला गया मध्य रात्रि में। जब महाराजा विरोचन ने अग्नि का मन्थन किया तो उसमें वह ध्वनि नहीं थी। जिससे यह सँसार देवताओं का बन रहा था। विरोचन जी ने कहा कि हे दैत्यो ! ध्वनि यज्ञ के दस पात्रों में चली गई है उससे तुम निकाल नहीं सकोगे।

तो मेरे प्यारे ! विचार विनिमय करो। ऋषि ने कहा है कि वह दैत्य कौन है? वृक क्या है? रेणुका क्या है? यज्ञ के दस पात्र क्या हैं? और अग्नि क्या है? ऋषि ने व्याख्या करते हुए कहा है कि यह जो मानव शरीर और जब यह सत्य के मार्ग पर चलता है तो देवासुर सँग्राम प्रारम्भ हो जाता है और देवासुर सँग्राम होते ही काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह इत्यादि जो यह दैत्य हैं इनमें विरोचन है, इन्हीं में रक्त बीज इत्यादि हैं। और देवता जब इनको विजय कर लेते हैं, देवत्व को प्राप्त होते हैं तो इनकी सभा में यह जो मनस्तत्व है यह पवित्र हो जाता है। ''वैदिक साहित्य में मन को वृक कहा जाता है।'' यह मन जब पवित्र होता है, जो भी इसकी ध्वनि को स्वीकार करता है वही देवता बन जाता है। वह ध्वनि क्या है? ''उसको धर्म कहा जाता है।'' उसी ध्वनि का नाम धर्म कहा गया है।

वेद का ऋषि कहता है जब यह मन इन काम, क्रोध, मद, लोभ इत्यादि दैत्यों के द्वारा छला जाता है तो यह उस देवताओं की धरोहर को

रेणुका में समाहित कर देता हे। ''रेणुका नाम बुद्धि को कहा गया है।'' जब यह बुद्धि छली जाती है दैत्यों के द्वारा तो यह देवताओं की धरोहर धर्म को अग्नि में समाहित कर देती है। अग्नि नाम वैदिक साहित्य में भिन्न-भिन्न स्वरूप माने हैं। 'परन्तु अग्नि नाम यहाँ वाणी को माना है।'' वाणी नाम अग्नि का है। यह अग्नि जब शरीर में प्रदीप्त रहती है वाणी उस समय यह व्यष्टि कहलाई जाती है और जब से मुखारबिन्दु से बाह्य हो जाती है तो समष्टि में परणित हो जाती है। उस समय तुम्हें यह प्रतीत होगा कि अग्नि है क्या? वाणी का रूप वर्णन किया। तब ये वाणी भी छली गई। निष्ठावाद के द्वारा उस समय ध्वनि यज्ञ के पात्रों में समाहित हो गई। बेटा ! वो यज्ञ-पात्र क्या हैं? मेरे प्यारे प्रभु ने जब ये सँसार रचा सृष्टि का प्रारम्भ हुआ तो ये जो मानव शरीर एक प्रकार की यज्ञशाला का निर्माण हुआ। ये जो मानव शरीर है इस यज्ञशाला में दस पात्र हैं, पांच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं और पांच कर्मेन्द्रियाँ हैं। **ये जो दस इन्द्रियाँ हैं यही इस मानव शरीर के दस पात्र कहलाए जाते हैं।** ऋषि ने कहा है इनके विषयों को मुक्त कर देना चाहिए। जो इनको मुक्त करना जानता है, जो मृत्यु से उल्लांघना चाहता है अज्ञान के क्षेत्र में इनको नहीं चाहता यह इन्द्रियाँ मानव को मौत के द्वार पर ले जाती हैं। इन्द्रियों के विषय को प्राण में समाहित कर दो और प्राणों को मानव पाँच उपप्राण, पाँच प्राणों को उनके कारण में कर दो और कारण अर्थात् गुण गुणी से कदापि पृथक नहीं होता। ज्ञान और प्रयत्न दोनों को लेकर के आत्मा प्रभु के द्वार पर ले जाता है।

मानव के लिए प्रेरणा

आओ मेरे प्यारे ! मैं आज विशेष दर्शनों में नहीं जाना चाहता हूँ। विचार विनिमय में क्या? मेरे प्यारे महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ये लोक कथा के द्वारा प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि मानव तू अपने मानव जीवन में दो बार सँग्राम करता हुआ मोक्ष को प्राप्त करने का प्रयत्न कर। यह सँसार नाशवान है जिसमें तुम विराजमान हो इसमें आसक्त होना मोक्ष

नहीं है। मृत्यु से उल्लांघने का प्रयास करो। ये जो मृत्यु है जो तुम्हें निगलती चली जा रही है। इस मृत्यु से पार होने का प्रयास करो। शरीर को त्यागने का नाम मृत्यु नहीं है। **मृत्यु तो अज्ञान का नाम है।** जब तुम्हारों शरीरों में अज्ञान स्थान कर जाता है उस समय तुम्हारी मृत्यु हो जाती है।

आज मैं विशेष चर्चा प्रकट करने नहीं आया हूँ। आज मैं तुम्हें उस क्षेत्र में नहीं ले जाना चाहता हूँ। विचार विनिमय में क्या? **प्रत्येक मानव को सँसार में तप करना है।** सूर्य प्रातःकाल में उदय होता है। साँयकाल में अस्ताचल को चला जाता है। परन्तु प्रकाश देता रहता है। तपता रहता है, तपाता रहता है। चन्द्रमा अपनी कान्तियों में तपता है। अमृत को प्रवाह से देता है। अमृत का प्रवाह चल रहा है नाना लोक लोकान्तर तपस्वी बन रहा है। मेरी प्यारी माता तप में बनने के पश्चात् ममतामयी बन गयी है। आचार्य गुरु के कुल में तप रहा है। परन्तु तपने के पश्चात् वो आचार्य बन जाता है। इसी प्रकार नाना प्रकार की वनस्पतियाँ हैं मानो वे तप से ही उत्पन्न होती हैं। प्रत्येक मानव को तपस्वी बनना है और **तप क्या है?** प्रत्येक इन्द्रियों को तपाना है, मन को पवित्र बनाना है। क्योंकि मन ही मानव इन्द्रियों ''वेगव प्रवाहित है'' मानो उनकी इन्द्रियों के वेगों को स्थिर करने वाला मनःस्थल है। आज मैं ये वाक्य उच्चारण कर रहा था कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए आज हम इस सँसार सागर से पार हो जाएँ।

पूज्यपाद-गुरुदेव

रात्रि काल की तरङ्गें

आओ मेरे प्यारे! आज का वेद का ऋषि हमारा क्या कहता है? मैंने अपने विचार बहुत संक्षिप्त से परिचय के रूप में प्रकट किये हैं। परिचय देना हमारा कर्त्तव्य है। मानव को आँकुचनता में प्रवेश नहीं करना चाहिये, सँकुचित नहीं रहना चाहिये। वह व्यापकवाद में मनोनीत में अपने को धारण

करता रहे। बेटा! वह नाना प्रकार की विद्याओं को अध्ययन करने वाले पुरुष थे। मेरे प्यारे हमारे यहाँ त्रेता के काल में महाराजा रावण के पुत्र मेघनाथ हुए और उनके विधाता थे जिनको कुम्भकरण कहते थे। एक समय बेटा! हिमालय की कन्दराओं में दोनों अनुसन्धान कर रहे थे परमाणु विद्या को जानने के लिये। **कुम्भकरण के मस्तिष्क में यह विज्ञान था** कि रात्रि के काल में किस प्रकार की तरङ्गें ओत-प्रोत होती रहती हैं? किस प्रकार की तरङ्गें वायु मण्डल में भ्रमण होती रहती हैं। रात्रि समय बेटा! वह जागरूक रहते। बारह वर्ष तक जागरूक रह करके कुम्भकरण ने मेरे प्यारे! रात्रि काल में जो तरङ्गें उत्पन्न होती हैं उनको विचारते रहते क्योंकि उसमें तमोगुण की प्रधानता होती है, तमोगुण की आभाएँ होती हैं और तमोगुण में भी सतोगुण की प्रधानता होती है और सतोगुण में रजोगुण का मिलान होता है रजोगुण सतोगुण में भी मानवीय दर्शन ओत-प्रोत होता है। यह महाराजा कुम्भकरण ने बहुत पुरातन काल में यह लेखनीबद्ध करते हुए कहा था। बारह-बारह वर्षों तक रात्रि काल में वह निद्रा नहीं करते थे और दिवस में वह निद्रित रहते थे। तो मुनिवरो! देखो रात्रि की तरङ्गों को वह विचारते रहते थे और उनको घ्राण के द्वारा, नेत्रों के द्वारा विज्ञान की तरङ्गों में लाते रहते थे। तो मेरे प्यारे! देखो विज्ञान एक महान् है। उस दर्शन को जानने के लिये हमारे ऋषि-मुनियों ने बहुत प्रयत्न किया। भारद्वाज मुनि महाराज के द्वारा महाराजा कुम्भकरण बेटा! बारह वर्ष तक योग का अभ्यास करते रहे। यौगिक क्रियाओं को अध्ययन करते रहे। मुझे स्मरण है बेटा! वह इतने अहिंसा परमोधर्मी थे वह अपने जीवन में बेटा! पुष्पों का, पत्रों का पान करते थे। मुझे स्मरण है एक समय बेटा! महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने, जल पीपल बट वृक्ष के पञ्चांग को पान कराया था उसके पश्चात् उन्हें योग की विद्यायें, दर्शनों का अध्ययन और उन्होंने चन्द्रमा की यातायात का वर्णन कराया।

पूज्यपाद-गुरुदेव

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. भौतिक विज्ञान जो होता है, वह मानव के संस्कारों से होता है।
2. आहार-व्यवहार यह अति सूक्ष्मता में जाने से उसकी प्रतिभा का ज्ञान होता है।
3. अंहिसा परमोधर्म की आवश्यकता मानव को आत्मिक ज्ञान में होती है।
4. सबसे प्रथम अपनी वैदिकता को जानने का प्रयास करें।
5. आज के राष्ट्र में सबसे सूक्ष्मता है ब्राह्मण की, क्योंकि ब्राह्मण त्यागी, तपस्वी नहीं हैं।
6. आत्मा का जो सबसे बड़ा धर्म है, वह अंहिसा परमोधर्म है।
7. यह जो हमारा गृह है, ये हमारे विचार करने के लिये सुन्दर मन्दिर है।
8. संसार में चरित्र ही जीवन है।
9. सर्वोदय–सबका उदय।
10. राजा और प्रजा, दोनों के मिलान से ही सबका उदय हो सकता है।
11. अनुशासन से मानव का जीवन बद्ध होता है।
12. राजा वही होता है जो सबका उदय चाहता है।
13. सबके उदय के लिये सबसे प्रथम बुद्धिमान ब्राह्मण की आवश्यकता है।
14. हिंसा वाणी से प्रारम्भ होती है।
15. एक ब्रह्मवेत्ता का वाक्य एक स्थान में है, एक करोड़ अपठित प्राणियों का वाक्य एक स्थान में है।
16. जितना वाक्य तपा होता है, उतनी ही उसमें शक्ति होती है।
17. विचारों की सम्पदा वैदिक ज्ञान में रहती है।
18. वेद का ऋषि कहता है कि यज्ञ ही मानव का जीवन है।
19. संसार में जो मानव सुन्दर कर्म करता है, ऊँचा कर्म करता है, निस्वार्थ है वही यज्ञ कहलाया जाता है।
20. त्याग प्रवृत्ति में ही तो जीवन है।
21. देव यज्ञ प्रत्येक कृषक के घर में वास्तव में अनिवार्य था।

दान-सूची

वैदिक अनुसन्धान समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए निम्न याज्ञिक एवम् श्रद्धालु महानुभावों ने अपना सात्त्विक सहयोग प्रदान किया है–

1. श्री कालूराम त्यागी, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.	1100 रुपये
2. श्री राजपाल वानप्रस्थी, भामौरी, सरधना, मेरठ	100 रुपये
3. श्री कमल सिंह, मोदीनगर	25 रुपये
4. श्री ओमवीर आर्य, सहारनपुर	100 रुपये
5. श्री धर्मवीर सैनी, मुजफ्फरनगर	250 रुपये
6. श्री अमित सुपुत्र श्री जीत पाल, मेरठ	200 रुपये
7. श्री मूलचन्द, सुराना, मुरादनगर, गाजियाबाद	500 रुपये
8. श्री रामकुमार, भड़ाल	100 रुपये
9. श्री राजेन्द्र शर्मा, रासना	500 रुपये
10. श्री ब्रह्म सिंह, काकड़ा, मुजफ्फरनगर	100 रुपये
11. श्री यादराम सुपुत्र श्री बलजीत, भामौरी, मेरठ	200 रुपये
12. श्री धर्म दत्त शर्मा, आई.आई.टी., रूड़की	10000 रुपये
13. सुश्री नीरू अबरोल, लाजपत नगर, दिल्ली	12012 रुपये
14. श्री विपिन कुमार भारद्वाज, गुड़गाव	1100 रुपये
15. श्री एन.एस. देसवाल, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	11001 रुपये
16. श्री राकेश शर्मा, पानीपत, हरियाणा	6012 रुपये
17. श्री संजीव त्यागी, फरीदाबाद, हरियाणा	5000 रुपये
18. सुश्री श्रुति त्यागी, पञ्चशील एन्क्लेव, दिल्ली	21000 रुपये
19. सुश्री रश्मि त्यागी, मकनपुर, गाजियाबाद	1500 रुपये
20. मास्टर कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी, भङ्गेल, नोएड़ा	3012 रुपये
21. मास्टर लोकेश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी, भङ्गेल, नोएड़ा	3012 रुपये
22. श्री वी.पी. सिंह, वैशाली, गाजियाबाद	1100 रुपये
23. श्री वाई.पी. सिंह, ग्रेटर नोएड़ा	500 रुपये
24. श्री सत्यवीर सिंह, मयूर विहार फेस-2, दिल्ली	500 रुपये
25. श्री सुरेश भारद्वाज जी, मौजपुर, दिल्ली	10000 रुपये
26. श्रीमति सुमित्रा देवी धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री स्वराज सिंह त्यागी, ग्राम मकनपुर, गाजियाबाद	5000 रुपये

27. श्रीमति राजबाला त्यागी, ग्राम मकनपुर, गाजियाबाद 1100 रुपये
28. श्री राजकिशोर त्यागी, ग्राम मकनपुर, गाजियाबाद 1100 रुपये
29. श्री अरूण कुमार त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद 6000 रुपये
30. श्री श्रीपाल त्यागी, संजय नगर, गाजियाबाद 1100 रुपये
31. श्री रामनिवास त्यागी, भङ्गेल, नोएड़ा 6024 रुपये
32. श्रीमति स्नेह त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद 1101 रुपये
33. श्रीमति सीमा धर्मपत्नी श्री अशोक त्यागी, स्याना, बुलन्दशहर 2100 रुपये
34. श्री कालूराम जी (सूर्यदेव के बाबा जी), दिनकरपुर, मुजफ्फरनगर 1100 रुपये
35. श्रीमति ऋचा त्यागी धर्मपत्नी डॉ. आलोक त्यागी, चरथावल, मुजफ्फरनगर 1100 रुपये
36. श्री मूलचन्द, सुराना, गाजियाबाद 500 रुपये
37. श्री कन्हैया लाल, ग्राम सरधना 200 रुपये
38. श्री योगेश सिंह, बुलन्दशहर 1100 रुपये
39. श्री शिवकुमार त्यागी, खुर्रमपुर, गाजियाबाद 100 रुपये
40. श्री मनोज कुमार आर्य, दिल्ली 150 रुपये
41. श्री अनिल त्यागी, बरनावा, बागपत 251 रुपये
42. श्री सोमपाल जी, खेड़ा 100 रुपये
43. श्री देवशरण त्यागी, दिनकरपुर, मुजफ्फरनगर 100 रुपये
44. श्री यादराम सुपत्र श्री बलजीत, भामौरी, सरधना, मेरठ 100 रुपये
45. श्री अभिनव त्यागी, हरिद्वार 201 रुपये
46. श्री पुष्पेन्दर, ग्राम सुवाहेड़ी, बिजनौर 250 रुपये
47. श्री दीपक कुमार, मोदीनगर 251 रुपये
48. श्री प्रमोद कुमार, मोदीनगर 500 रुपये
49. श्री विदुर मोहन, सटेड़ी 250 रुपये
50. श्री कृष्णागिरी आर्य, आजमपुर 1100 रुपये
51. श्रीमति ज्योति गोस्वामी, आजमपुर 1100 रुपये
52. श्री कमल सिंह, मोदीनगर 251 रुपये
53. श्रीमति सुजाता त्यागी, शाहदरा, दिल्ली 1100 रुपये
54. श्रीमति रूमा त्यागी, मुजफ्फरनगर 500 रुपये
55. श्री ब्रह्म सिंह सैनी, काकड़ा, मुजफ्फरनगर 100 रुपये

56. श्री रामप्रकाश, तलहैटा	100 रुपये
57. श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री धर्मवीर त्यागी, मोदीनगर	250 रुपये
58. श्री भगवान, वझिरपुर, हापुड़	100 रुपये
59. श्री संदीप त्यागी, दिल्ली	101 रुपये
60. श्री तेजपाल सिंह, काशीपुर गढ़ी	1100 रुपये
61. श्री अभिमन्यु पवार, दिल्ली	2100 रुपये
62. गुप्त दान	150 रुपये
63. गुप्त दान	200 रुपये
64. गुप्त दान	100 रुपये
65. मास्टर चेतन सिंह, शाहकुलीपुर, मेरठ	500 रुपये
66. श्री समरपाल सिंह सैनी, रूड़की	100 रुपये
67. श्री अनंग पाल सिंह, दुराला	500 रुपये
68. श्री योगेन्द्र सिंह, बुलन्दशहर	1100 रुपये
69. श्री तेजपाल चौहान जी, रूड़की	2100 रुपये
70. श्रीमति सविता त्यागी धर्मपत्नी श्री रामवीर त्यागी, चमरावल, बागपत	1100 रुपये
71. श्री विष्णुदत्त, बरखण्ड़ा, हापुड़	1100 रुपये
72. श्री विशम्बभर नाथ टंडन, कोलकाता	1100 रुपये
73. श्री हरिशन्द्र गुप्ता, कुरूक्षेत्र, हरियाणा	50000 रुपये
74. श्री एन.एस. देसवाल, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	10000 रुपये
75. श्रीमति ऊषा गौड़, S.A.I.L., नई दिल्ली	501 रुपये
76. श्री आर.के. अरोड़ा, कालकाजी, नई दिल्ली	1100 रुपये

सभी उपरोक्त दान दाताओं का समिति हृदय से आभार प्रकट करती है जिन्होंने पूज्यपाद-गुरुदेव की अमृतवर्षा को निरन्तर प्रवाहित होने के लिए अत्यन्त उदारता और समर्पण भाव से समिति का सहयोग किया है जिससे कि जन-कल्याण में पूज्यपाद-गुरुदेव की अमृतवर्षा निरन्तर समाज का उत्थान करने में प्रकाशमान बनी रहें। और सभी श्रद्धालुओं को परिवार सहित जीवन में सुख, शान्ति व सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	120.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	160.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	40.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	50.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	50.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेध-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	55.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	50.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	160.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	150.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00
*78.	यौगिक प्रवचन माला भाग-19	120.00
79.	मानव दर्शन	150.00
80.	यौगिक प्रवचन माला भाग-20	160.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम् कर्मभूमि लाक्षागृह	10.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, पेनड्राइव के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं. 09897695391
2. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294, मोबाइल नं. 9810887207
3. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, डी-33 पञ्चशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
4. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
5. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)।
6. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। फोन नं. 0120-4202763, मो. नं. 9818079943
7. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
8. आचार्य अरविन्द कुमार शास्त्री, मं.न. 209 ग्रीन हाईटस A to Z रूड़की रोड़, मोदीपुरम्, मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09411823200
9. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पँचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
10. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
11. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
12. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
13. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
14. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
15. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली– स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्रीमति रेणु तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली– स्मृति–श्री रत्न तुली	1001 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	501 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
कुमारी प्रीक्षा त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
मास्टर कबीर, कुमारी रिधानी मल्हौत्रा, ब्रज विहार, गाजियाबाद	101 रुपये
कुमारी सृष्टा, मास्टर अव्युक्त, पश्चिम एन्कलेव, नई दिल्ली	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है कि मासिक सहयोग की राशि समय पर प्रेषित करने का सहयोग करें जिससे प्रकाशन निरन्तर ऊर्ध्वागति को प्राप्त होता रहें। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद-गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

हमें विचारना है कि हम सर्वत्र प्रभु को दृष्टिपात् करें, कण-कण में जब हम प्रभु को दृष्टिपात् करते हैं तो मानव पाप-कर्म नहीं करता। मानव पाप-कर्म उस काल में करता है जब परमात्मा को अपने से दूर कर देता है और दूर क्यों कर देता है—केवल अज्ञानता के वश क्योंकि वह प्रभु को जानता नहीं। जो मानव प्रभु को जानता है वह पाप नहीं करता, पाप वही मानव किया करता है जो प्रभु से दूर हो जाता है। जो प्रभु को कण-कण में, मनों में, चक्षुओं में, श्रोतों में, प्रत्येक इन्द्रिय में प्रभु की प्रतिभा स्वीकार करता है, जिसने जो वस्तु बनाई है उसमें वह रमण भी कर रहा है और जब मानव को यह निश्चय हो जाता है कि वहाँ मानव पाप नहीं करता।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 50 : अंक : 586
अप्रैल 2022

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2021-2023
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-4-2022
Published on 5th day of the same month

वर्ष 50 : अंक : 586
अप्रैल 2022

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2021-2023
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-4-2022
Published on 5th day of the same month